श्रीभगवद्गीता : अध्याय ९, श्लोक २७

हे अर्जुन, तुम जो कुछ भी करो, जो भी खाओ,
पूजा-अनुष्ठानों में जो भी अर्पित करो,
दूसरों को जो कुछ भी दो,
तुम जो भी तपस्याएँ करो,
उसे मेरे प्रति एक अर्पण के रूप में करो।[१]

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

---

१ अंग्रेज़ी भाषान्तर, जोएल दुबुआ व बेन विलियम्स् द्वारा © २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन।